श्री अनारदेवी खण्डेलवाल महिला महाविद्यालय, मथुरा
विषय - हिन्दी आशुलिपि
कक्षा - द्वितीय Semester
विभाग - MOM&SP.
अध्यापक - श्रीमती सुजाता सिंह

प्र० - "न" आकंडे का प्रयोग

जिस तरह किसी व्यंजन में बाएं से दाहिने तरफ का घुमावदार आकंडा लगाने से 'त' बनता है उसी तरह यदि दाहिने से बाएं की तरफ घुमावदार एक छोटा सा आकँडा व्यंजन की सरल रेखा के अंत में लगाया जाए तो वह 'न' बनता है।

पन रन खन गन

वक्र रेखा में यह आकँडा उसके अंत में एक छोटे से घुमाव के रूप में लगाया जाता है। इसके और त के आकँडे में केवल इतना ही अंतर होता है कि त आकंडे में एक छोटा सा लम्बाकार डैश लगा रहता है न के आकँडे में कोई डैश नही होता है।

वन सन मन

क्रिया के अंत में इस आकँडे का उच्चारण 'ना' या 'ने' और कभी कभी 'नी' भी मुहावरे के अनुसार होता है जैसे :-

रखना-ने-नी लड़ना-ने मारना-ने

यदि ना के बाद कोई मात्रा आती है तो वह 'न' का आकँडा नही लगाया जाएगा पूरा न लिखा जाएगा :-

कान काना कानें

न का आँकड़ा बीच में भी लगाया जाता है। वक्र ~~रेखा~~ व्यंजन के बीच में भी न का आँकड़ा लगाया जाता है।

पनप   कनक

तनन   सनन

जब यह आँकड़ा किसी व्यंजन की दो रेखाओं के बीच में आता है इसका अर्थ केवल 'न' होता है और मात्रा अगली रेखा के पहले नियमानुसार लगाई जाती है।

पनसारी   बानिज   चुनायानी

बीच में जब 'न' आँकड़े के साथ दूसरा अक्षर सफलतापूर्वक न मिल सकता हो या जब प्रवाह में रुकावट का डर हो तो बीच में 'न' का आँकड़ा न लिखकर पूरा 'न' लिखना चाहिये। जैसे:-

खनिज   पानदान